आर्टस् अँड कॉमर्स कॉलेज, आष्टा

आध्यापक का नाम- विश्वास निवृत्ती   पाटील

बी ए भाग -3

साहित्यशात्र

अलंकार

मानव समाज सौन्दर्योपासक है ,उसकी इसी प्रवृत्ति ने अलंकारों को जन्म दिया है। शरीर की सुन्दरता को बढ़ाने के लिए जिस प्रकार मनुष्य ने भिन्न - भिन्न प्रकार के आभूषण का प्रयोग किया , उसी प्रकार उसने भाषा को सुंदर बनाने के लिए अलंकारों का सृजन किया।

काव्य की शोभा बढ़ाने वाले शब्दों को अलंकार कहते है।

जिस प्रकार नारी के सौन्दर्य को बढ़ाने के लिए आभूषण होते है , उसी प्रकार भाषा के सौन्दर्य के उपकरणों को अलंकार कहते है। इसीलिए कहा गया है -

'भूषण बिना नसोहई -कविता ,बनिता मित्त।'

अलंकार के भेद

इसके तीन भेद होते है –

1. शब्दालंकार
2. अर्थालंकार
3. उभयालंकार

शब्दालंकार

जिस अलंकार में शब्दों के प्रयोग के कारण
कोई चमत्कार उपस्थित हो जाता है और उन शब्दों के स्थान पर समानार्थी दूसरे शब्दों के रख देने से वह चमत्कार समाप्त हो जाता है, वह शब्दालंकार माना जाता है।

शब्दालंकार के प्रमुख भेद है -

1. अनुप्रास
2. यमक
3. शेष

अनुप्रास

अनुप्रास शब्द 'अनु' तथा 'प्रास' शब्दों के योग से बना है। 'अनु' का अर्थ है :- बार- बार तथा 'प्रास' का अर्थ है - वर्ण। जहाँ स्वर की समानता के बिना भी वर्णों की बार - बार आवृत्ति होती है ,वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। इस अलंकार में एक ही वर्ण का बार -बार प्रयोग किया जाता है।

जैसे -

जन रंजन मंजन दनुज मनुज रूप सुर भूप।
विश्व बदर इव धृत उदर जोवत सोवत सूप ।।

यमक अलंकार

जहाँ एक ही शब्द अधिक बार प्रयुक्त हो,
लेकिन अर्थ हर बार भिन्न हो, वहाँ यमक अलंकार होता है।
उदाहरण -

- काली घटा का घमंड घटा

(घटा-काले बादल, घटा-कम होना)

- ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहन वारी, ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहाती हैं।

(मन्दर-अट्टालिका, मन्दर-गुफा।)

श्लेष अलंकार

जहाँ पर ऐसे शब्दों का प्रयोग हो ,जिनसे एक से अधिक अर्थ मिले , वहाँ पर श्लेष अलंकार होता है । जैसे -

- मंगन को देखि पट देख बार-बार।
  (पट-वस्त्र,पट-किवाङ)
- जा तन की झँाई परै,स्याम-हरित दुति होय।।
  (हरित-हरे रंग का होना,हरित-हर लेना,हरित-हर्षित होना)

अर्थालंकार

जहाँ अर्थ के माध्यम से काव्य में चमत्कार उत्पन्न होता है ,वहाँ अर्थालंकार होता है । इसके प्रमुख भेद है -

1. उपमा
2. रूपक
3. उत्प्रेक्षा
4. दृष्टान्त
5. संदेह
6. अतिशयोक्ति

उपमा अलंकार

जहाँ दो वस्तुओं में अन्तर रहते हुए भी आकृति एवं गुण की समता दिखाई जाय , वहाँ उपमा अलंकार होता है।

उदाहरण -

- समय शिला-सा जम जा जाऐगा।

(पत्थर के समान)

- ये देखिऐ अरविंद-से शिशुवृंद कैसे सो रहे।

(कमल के फूल के समान बच्चे)

रूपक अलंकार

जहाँ उपमेय पर उपमान का आरोप किया जाय ,वहाँ रूपक अलंकार होता है ,यानी उपमेय और उपमान में कोई अन्तर दिखाई नहि पडता है ।

उदाहरण -

बीती विभावरी जाग री।

अम्बर -पनघट में डुबों रही, तारा-घट उषा नागरी।

यहाँ अम्बर में पनघट ,तारा में घट तथा उषा में नागरी का अभेद कथन है।

उत्प्रेक्षा अलंकार

जहाँ उपमेय को ही उपमान मान लिया जाता है यानी अप्रस्तुत को पृस्तुत मानकर वर्णन किया जाता है। वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। यहाँ भिन्नता में अभिन्नता दिखाई जाती है।

उदाहरण -

सखि सोहत गोपाल के ,उर गुंजन की माल
बाहर सोहत मनु पिये,दावानल की ज्वाल ।।

यहाँ गूंजा की माला उपमेय में दावानल की ज्वाल उपमान के संभावना होने से उत्प्रेक्षा अलंकार है।

अतिशयोक्ति अलंकार

जहाँ पर लोक -सीमा का अतिक्रमण करके किसी विषय का वर्णन होता है। वहाँ पर अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण -

हनुमान की पूंछ में लगन न पायी आगि।
सगरी लंका जल गई ,गये निसाचर भागि।।

यहाँ हनुमान की पूंछ में आग लगते ही सम्पूर्ण लंका का जल जाना तथा राक्षसों का भाग जाना आदि बातें अतिशयोक्ति रूप में कहीं गई है।

संदेह अलंकार

जहाँ प्रस्तुत में अप्रस्तुत का संशयपूर्ण वर्णन हो ,वहाँ संदेह अलंकार होता है।

जैसे –

सारी बिच नारी है कि नारी बिच सारी है ।
कि सारी हीकी नारी है कि नारी हीकी सारी है ।।

इस अलंकार में नारी और सारी के विषय में संशय है अतः यहाँ संदेह अलंकार है।

धन्यवाद।